श्री सत्य प्रकाश मालवीय : मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है। मेरा निवेदन यह है कि इन्होंने यह कहा कि संपूर्ण उत्तर प्रदेश की जो सरकार है वह अपराधियों का संरक्षण कर रही है और इस पर आपने जो व्यवस्था दी है कि माननीय मंत्री जी इनकी भावनाओं से सरकार को अवगत करा देंगे। मेरा निवेदन यह है कि, इनकी जो भावना है उसका कोई आधार नहीं है। इसके लिए किसी व्यक्ति को कहें, किसी मंत्री को कहें, जो अधिकारी हैं—उनको कहें, लेकिन सारी उत्तर प्रदेश की सरकार को . . . **(व्यवधान)** . . .

उपसभापति : मैंने यह कहा, आप कुछ देख रहे थे, आप पूरी बात सुनिए। मैंने कहा कि मंत्रीजी यह भावना सरकार को पहुंचाएं जोकि यहां हाऊस में उठायी है, जानकारी करें और जो अपराध हों, उनको सजा दें

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : पहले आपने कहा था।

उपसभापति : बाद में भी वहीं बात कहीं।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : उस व्यवस्था के बाद सत्या बहिन ने यह प्रश्न उठाया।

उपसभापति : अपराधी हैं तो उन्हें सजा मिलनी चाहिए। अपराधी नहीं होंगे तो सजा कैसे मिलेगी ?

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : सारी सरकार अपराधी है, यह कहना गलत है।

उपसभापति : मालवीय जी, आप भी अपराधियों को नहीं बचाएंगे, इसलिए जो अपराधी हैं उन्हें पकड़े जाने दीजिए . . . (व्यवधान) . . . मालवीय जी, जो अपराधी हैं, वे जरूर पकड़े जाने चाहिए और जो नहीं हैं वे तो छूट ही जाएंगे।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : सारी सरकार को अपराधी कहना—इसका कोई आधार नहीं है और जिस चीज का कोई आधार नहीं है, उस पर कोई व्यवस्था नहीं दी जानी चाहिए।

श्रीमती सत्या बहिन : जो हत्याएं व बलात्कार बढ़ रहे हैं उसके लिए पूरी सरकार जिम्मेदार है।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : सरकार जिम्मेदार है, लेकिन सरकार अपराधियों को संरक्षण दे रही है, इसको मैं नहीं मानता।

श्रीमती सत्या बहिन : महोदया मैं आरोप लगाती हूं कि सरकार संरक्षण दे रही है। इसकी जानकारी केन्द्रीय सरकार को होनी चाहिए। महोदया, इस बारे में निर्देश दिए जाएं केन्द्र सरकार उनको हिदायत दे कि वह अपराधियों को मदद देना बंद करे। यह हर जिले में हो रहा है। मैं आपको प्रमाण देने के लिए तैयार हूं।

श्री शांति त्यागी (उत्तर प्रदेश) : सब खुले आम हो रहे हैं।

उपसभापति : सरकार अपनी जिम्मेदारी को समझेगी।

श्रीमती सत्या बहिन : दुःख यह है कि समझ नहीं रही है।

श्री शांति त्यागी : कब तक समझेगी ?

उपसभापति : मैंने तो आज कह दिया है।

[उपसभाध्यक्ष (श्री भास्कर अन्नाजी) पीठासीन हुए]

Situation arising out of anti-reservation agitation in Delhi

श्री कृष्ण लाल शर्मा (हिमाचल प्रदेश) : महोदया, मैं आज अपने विशेष उल्लेख के माध्यम से सरकार का ध्यान आरक्षण विरोधी आंदोलन से उपस्थित गंभीर परिस्थिति की ओर दिलाना चाहता हूं।

जब मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करने की घोषणा प्रधान मंत्री ने की थी तो उस समय भी यह आशंका व्यक्त की गई थी कि यह फैसला जल्दबाजी में किया जा रहा है। उसका जवाब देते हुए प्रधान मंत्री ने कहा था कि यह जल्दबाजी में नहीं किया जा रहा है। और इस पर कनसेंसस बना है। मैं यह कहना चाहता हूं कि कंसेंसस तो बहुत-सी

[श्री कृष्ण लाल शर्मा]

बातों में बना है। राइट टू वर्क का कनसेंसस है जिस पर कोई कंट्रावर्सी नहीं है। उस पर प्रधान मंत्री ने कहा कि इसके बारे में हम अन्य दलों से चर्चा करेंगे, बातचीत करेंगे, फिर आगे कदम उठायेंगे। लेकिन आरक्षण संबंधी मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करने की घोषणा की गई, तो लोगों की समझ में नहीं आया कि क्यों कम्पलसन थी। इस विषय में जल्दबाजी में घोषणा करने की। इसमें हमने सबसे बड़ी गलती यह की कि हमने अपने समाज को और देश को इसके लिए तैयार नहीं किया। हमने आशंकाएं उत्पन्न कर दीं और अभी तक यह क्लेरिटी नहीं है कि मंडल आयोग की सिफारिशें कहां लागू होंगी, कहां लागू नहीं होंगे और इसका कितना इम्पेक्ट होगा।

SHRI T. A. MOHAMMED SAQHY (Tamil Nadu): The Mandal Commission Report has been there for the past ten years.

SHRI KRISHAN LAL SHARMA: I know it. The Government itself is giving clarifications.

यह एडमीशन में लागू नहीं होगा, प्रदेशों में लागू नहीं होगा, केन्द्र में होगा—यह उनको सफाई देना पड़ रही है। मेरा कहना यह है कि हम मंडल आयोग की सिफारिशों के पक्ष में हैं। दुर्भाग्य की बात यह है कि ज्यादातर दल, अधिकतर नेता इसके पक्ष में हैं, उसके बाद भी यह स्थिति पैदा हुई है कि हमने आपस में सलाह-मशविरा किए बिना जल्दबाजी में यह कदम उठाया और उसके कारण ये गलतफहमियां पैदा हुई हैं।

SHRI S. VIDUTHALAI VIRUMBI (Tamil Nadu): I want to know whether you are opposing the Mandal Commission Report.

SHRI KRISHAN LAL SHARMA: I have made it clear that I am not opposing the Mandal Commission Report. What I am saying is that the situation which has arisen.... (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): He is asking the Government to make the position clear.

श्री कृष्ण लाल शर्मा: इस बात का मुझे दुख है और सरकार को इस बारे में बताना चाहिए क्योंकि एक चीफ मिनिस्टर यह कह रहे हैं कि मंडल-कमीशन की रिपोर्ट मैं स्वीकार नहीं करता, संकेत मिल रहे हैं कि उनकी कैबिनेट में कुछ मतभेद हैं। मुझे लगता है कि जितनी सावधानी रखनी चाहिए थी, जितनी चर्चा करनी चाहिए थी इसको लागू करते समय, नहीं हुई। कई चीजें ऐसी हैं, जिन पर हम सहमत हैं, लेकिन अब फाइनल स्टेज है लागू करने की, उसमें चर्चा करना ज्यादा उपयोगी है। और स्टूडेन्टस सड़कों पर हैं सारे देश में आरक्षण-विरोधी आंदोलन है। मैं सरकार से यह अपील करना चाहता हूं कि दमनकारी तरीकों से अगर स्टूडेंटस को दबाने की कोशिश की गई तो उसकी प्रतिक्रियाएं और ज्यादा होंगी। अगर विद्यार्थियों में कई आशंकाएं और भ्रम पैदा हो गए हैं तो उनको बातचीत के लिए आप बुलाएं, उनसे बात करेंगे। जहां तक मंडल कमीशन की रिपोर्ट को लागू करने का है, I am again saying that we are not against the recommendations of the Mandal Commission.

उसमें सिर्फ हमने आर्थिक आयाम जोड़ने का एक सुझाव दिया है। हम चाहेंगे कि इस पर गंभीरता से विचार हो।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मुझे यह भी कहना है कि एक तरफ विद्यार्थियों को बुलाकर तुरंत बातचीत की जाए वहीं विद्यार्थियों से भी अपील करना चाहता हूं कि वे शांति से काम करें और किसी भी तरह की तोड़फोड़ या इस तरह के काम न करें, जिससे देश की सम्पत्ति को नुकसान हो। सरकार का फर्ज था, इतने दिन हो गए, एक हफ्ते से ज्यादा हो गया, उनको बातचीत के लिए बुलाना चाहिए

या, उनको बुलाकर बातचीत करें। यह भी जरूरी है कि एक राउण्ड टेबल मीटिंग होनी चाहिए, जिसमें पॉलिटिकल पार्टीज हों, सोशल, इकानामिक एक्सपर्ट हों और उसमें भी इस पर चर्चा हो। मैं फिर यह कह रहा हूं कि डायरेक्शन एक ही है—how to implement the Mandal Commission's recommendations.

यह डायरेक्शन है और इसके लिए जहां कहीं शंका है, जहां कहीं मतभेद हैं, उसके बारे में लोगों को स्पष्ट किया जाय।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि दिल्ली एडमिनिस्ट्रेशन ने यह घोषणा की है कि एक महीने के लिए स्कूल और कालेज बन्द किए जाएं। It will create panic. इससे हम विद्यार्थियों को, स्टूडेन्टस को सड़कों पर लाने की योजना बना रहे हैं। अगर वे स्कूल में, कालेज में नहीं जाएंगे तो वे सड़कों पर आयेंगे।

[उपसभापति पीठासीन हुईं]

महोदया, मुझे लगता है कि ऐसे पेनिक डिसीजन जो हैं, उनके अपने मन के अंदर की कोई कमजोरी है, जिस पर रिएक्शन कर रहे हैं। इसलिए मेरा यह कहना है कि इस तरह के डिसीजन जो हैं, एडमिनिस्ट्रेशन को, सरकार को सोच-समझकर लेने चाहिएं। हमारे देश में इस आन्दोलन को शांत करने के लिए तरीका यही है कि हम स्टूडेंटस को बातचीत के लिए, डायलोग के लिए बुलाएं। उस दिन प्रधान मंत्री जी ने माना भी था कि हम बुलायेंगे, लेकिन अभी तक नहीं बुलाया। उनको तुरंत बुलाना चाहिए। दूसरा सुझाव यह है कि एक राउण्ड टेबिल कांफ्रेंस हो, जिसमें इसके इंप्लीमेंशन पर विचार हो और कुछ ऐसे कदम उठाएं, जिससे सब लोगों की आशंकाओं को दूर किया जा सके। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Yes, Mr. Bhandare.

SHRI PASUMPON THA. KIRUTTINAN (Tamil Nadu): Madam, I want to dissociate myself with what the honourable Member has said... (*Interruptions*)...On the very same day, when the Prime Minister announced about the implementation of the Mandal Commission's report, all the political parties in this House supported his statement... (*Interruptions*)...It seems it was only a lip-service... (*Interruptions*)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Are you associating or dissociating?... (*Interruptions*)...

SHRI PASUMPON THA. KIRUTTINAN: Now, some parties create disturbances in the country... (*Interruptions*)... Some parties are creating disturbances, some vested interests... (*Interruptions*)...

THE DEPUTY CHAIRMAN : Excuse me. You want to dissociate? All right, O.K. ... (*Interruptions*)... Yes, Mr. Ahluwalia.

SHRI PASUMPON THA. KIRUTTINAN: We want to dissociate .... (*Interruptions*)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: All right. You are dissociating. I will call Mr. Ahluwalia now. Yes, Mr. Ahluwalia.

श्री सुरेन्द्र जीत सिंह अहलूवालिया (बिहार): महोदया, इसी सदन के एक सदस्य जो बी० जे० पी० के सदस्य हैं बा० जैन वे पिछले पांच दिनों से अनशन पर बैठे हुए हैं आमरण अनशन पर और उनकी हालत दिन पर-दिन बिगड़ती जा रही है। मेरी आपसे गुजारिश है कि उनके बारे में कुछ खोज-खबर ली जाये जो पिछले पांच दिन से अनशन पर बैठे हैं। वे कहते हैं कि जब तक मंडल कमीशन का यह विदड्रा नहीं किया जाएगा 'वह मर जाएगा' आत्मदाह कर लेगा। तो उसके बारे में क्या सोच रहे हैं?... (**व्यवधान**)...

उपसभापति: उनके अनशन के लिए कहा कि खबर लें खाली। (**व्यवधान**)...

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : प्लीज माथुर साहब आप एक मिनट बैठिए में एलाऊ करता हूं। All of you, please take your seats. Let me explain. In this House, many Members raise their Special Mentions and it is not necessary that you go along with their opinion. You can go or you need go and it is entirely up to you. It is entirely up to you. The Member spoke about himself. So you don't get agitated.I f yu don't agree with it, don't agree with it. I am not asking you to agree. But let him have his say. ...(*Interruptions*).

Okay, you are dissociated. (*Interruptions*) Agreed. Let me finish one matter. (*Interruptions*) Just a minute.

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : इससे एक प्रश्न पैदा हुआ है कि इस सदन के एक माननीय सदस्य डा० जे०के० जैन हैं जिनका संबंध भारतीय जनता पार्टी से है वह बोट क्लब पर अनशन पर बैठे हैं और उनकी मांग यह है कि मंडल कमीशन की जो सिफारिशें हैं, उनके विरोध में वह बैठे हुए। अभी शर्मा जी ने कहा कि वह मंडल कमीशन की सिफारिशों का समर्थन करते हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री कृष्ण लाल शर्मा : बिल्कुल।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : लेकिन उन्होंने कुछ कारणों को बताया कि उनकी सफाई होनी चाहिए। ...(**व्यवधान**)... छात्रों का बचाना चाहिए, वह बात तो ठीक है लेकिन मैं सिर्फ एक बात जानना चाहता हूं कि चूंकि डा० जैन भारतीय जनता पार्टी के सदस्य हैं, तो क्या डा० जैन पार्टी की अनुमति से अनशन पर बैठे हैं या यह उनकी अपनी व्यक्तिगत राय है?

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश) : महोदया, मेरे दल का नाम लिया गया है तो मैं स्थिति साफ करना चाहता हूं डा० जैन के सवाल पर। डा० जैन का यह कथन, जो उन्होंने बाद में बदलता है, कि मंडल कमीशन की रिपोर्ट वापिस हो, भारतीय जनता पार्टी इस बात से बिल्कुल असहमत है। भारतीय जनता पार्टी के नाते से हम मंडल कमीशन की रिपोर्ट के साथी सहमत है। डा० जैन ने, हम लोगों की दृष्टि से, यह मांग करके कि मंडल कमीशन की रिपोर्ट वापिस होनी चाहिए, गलती की हैं। पार्टी इसको डिसएप्रूव करती हैं। उनसे मिलने के लिए पार्टी की तरफ से दो लोग भेजे गए मैं कि आपको अनशन वापिस लेना चाहिए। अब उन्होंने अनशन शायद वापिस कर लिया है या नहीं किया है... (**व्यवधान**) ...

श्री राम नरेश यादव : डा० जैन के खिलाफ अनुशासन हीनता की यह कार्रवाई करने जा रहे हैं या नहीं? ...(**व्यवधान**)

THE DEPUTY CHAIRMAN: That matter is over. Some people support; some people oppose. Now, Mr. M.C. Bhandare. (*Interruptions*)

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : महोदया, डा० जैन के अनशन से प्रभावित होकर हो आज संस्कृत विद्यापीठ के छात्र कह रहे हैं कि वह सामूहिक आत्मदाह कर लेंगे। ...(**व्यवधान**)...

श्री कृष्ण लाल शर्मा : यह गलत बात है। यह मैं भी कह सकता हूं कि यह आपके कहने से हो रहा है। .... (**व्यवधान**)...

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : तो यह जो छात्र आत्मदाह की बात कर रहे हैं, इसे कैसे रोकेंगे?

SHRI H. HANUMANTHAPPA (Karnataka): We are in a...(*Interruptions*) Madam, why are we provoked? So many parties support and so many oppose. But they speak as one party. But if you are contradicting things, then we are provoked. (*Interruptions*)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now that matter is closed. I have called Mr. Bhandare. I have identified him.

श्रीमती सत्या बहिन : मंडल कमीशन की रिपोर्ट लागू नहीं करेंगे, तो इसके बाद प्रधान मंत्री क्या करेंगे ? **(व्यवधान)**

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : जो सरकार है, उसमें भी लोग ऐसे हैं जो.... **(व्यवधान)**...लेकिन हम तो कहते हैं कि मंडल कमीशन की रिपोर्ट लागू होनी चाहिए ... **(व्यवधान)**...

श्रीमती सत्या बहिन : मंडल कमीशन लागू होगा या नहीं होगा ?.... **(व्यवधान)**...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now the matter is closed. Mr. Bhandare. (*Interruptions*)

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश) : मैडम डिप्टी चेयरमैन साहिबा, एक मिसअंडरस्टैंडिंग हो गई जरा सी : मैंने यह आब्जेक्शन किया था कि जो वाइस चेयरमैन के पैनल पर हैं, जब वे ही चेयर का कहना नहीं मानते तो यह हमारे लिए शर्म की बात है। मैंने देखा बाहर जाकर कि बहन जयन्ती नटराजन रो रही हैं, उनको बड़ा अफसोस हुआ। मैं समझता हूं कि मेरी बात से उनको ठेस पहुंची। मैं क्षमा चाहता हूं उनसे।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Very good. बड़ी अच्छी परम्परा रखी आपने इस हाऊस में। मैं आपकी चेयर की तरफ से आभारी हूं। जयन्ती नटराजन हमेशा चेयर को सपोर्ट करती हैं। यकीनन कोई बात होगी जो वह कहना चाहती हैं। मैं उन्हें परमिट कर देती क्योंकि मेरे पास दूसरा बिजनेस था। I told her that I would allow her. इसलिए मैं आइंदा भी उम्मीद करूंगी कि मैम्बर्स एक दूसरे का दिल न दुखाएं तो ज्यादा बेहतर है क्योंकि रोने तक मामला जाए तो अच्छा नहीं लगता। .... **(व्यवधान)**....अब भंडारे जी को बोलने दीजिए।

Demand for a legislation for the formation of a consumer protection fund

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE (Maharashrat): I rise to invite the attention of the Government to a very serious and gross problem of unjust enrichment at the cost of the common man who is the biggest consumer in the country. There are cases where various taxes and duties like the Excise Duty, Sales Tax, Customs Duty, etc. are collected. The Agricultural Marketing Committees collect a lot of money. Then it happens that that levy turns out to be illegal. In the meantime, the amounts have been collected by either the manufacturers or the traders from the consumers themselves. For example, Sales Tax which has been illegally collected by the Sales Tax authorities and which, in the meantime, has been collected from the common man is ordered to be refunded to the trader, likewise unjust refunds are made to the manufacturer. They have neither any legal right nor any moral right for refund of this amount. The Supreme Court and the High Courts have held that neither the trader nor the manufacturer is entitled to the benefit of such a refund and unjust enrichment thereby.

In spite of this position, I am amazed to find that a circular has been issued by the Ministry of Finance on the 28th of March, 1990, referring to an ancient circular of 10th of August, 1981, and saying that there is no provision for rejecting the referred claim on the ground that the sanction of the claim would result in a fortuitous benefit to the manufacturers. It is quite amazing. According to me, an explanation should come from the Government as to why in the face of the Supreme Court and the High Court orders saying that the manufacturer or the trader is not entitled to such unjust enrichment, how this circular has come to be issued.

A modest estimate of the amount given is about Rs. 10,000/- crores. Now